6–3–67 ओमशांति प्रातःक्लास

मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप फिर से समझा रहे हैं।रोज2 समझानी देते हैं।बच्चे तो समझते हैं कि बरोबर हम गीता का ज्ञान ही पढ़ रहे हैं कल्प पहले मुआफिक ; परंतु कृष्ण नहीं पढ़ाता है।परमपिता परमात्मा हमको पढ़ाते हैं।परमात्मा के लिए यह तो सबको याद है कि वो निराकार लिंग है।अभी हमको बाप फिर से राजयोग सिखा रहे हैं।उन्होंने तो झूठी ही पुस्तक बनाकर नाम रख दिया है श्रीमदभगवद गीता।अभी तुम बच्चे सिद्ध कर बताते हो यह है सच्ची गीता पाठशाला।बाकी सब है झूठी।उसमें से झूठपना भी समझाना पड़े।झूठी गीता पढ़ते2 भारत दुर्गति को पहुंच गया है। तुम अभी डायरैक्ट ही गीता के भगवान से सुन रहे हो।भल गीता आगे भी सुनाते थे ;परंतु समझते थे कृष्ण भगवानोवाच।वो तो है रांग।कृष्ण का नाम गीता में डालने से और फिर उस गीता को पढ़ते2 भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है अर्थात् झूठी गीता सुन2 दुर्गति को पाया है।सच्ची गीता से अभी तुम सदगति को पा रहे हो।अब तुम सच्ची गीता भी छपवाते हो।सिंधी में भी लिखी हुई है ;परंतु उसमें अभी इतनी क्लीयर नहीं है जो कि मनुष्य समझे।भारतवासियों का सारा मदार गीता पर ही है।इस गीता में भी लगा हुआ है कि रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा।यह यज्ञ भी है तो पाठशाला भी है।यज्ञ में कब पाठशाला होती नहीं है।कब2 यज्ञ रचते हैं तो उसमें बहुत शास्त्र भी रखते हैं।बड़ा रुद्र यज्ञ रचते हैं।उसको हवन भी कहते हैं।और फिर सभी शास्त्र भी बैठ सुनाते हैं।इन सबमें मूल है गीता।सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमदभागवत गीता ही गाई जाती है।तुम अर्थ भी समझते हो।गीता वास्तव में भगवान की गाई हुई है।भगवान एक ही बार गीता गाते हैं।बाकी शास्त्र कोई भगवान के नहीं हैं।उस गीता में नाम डाल दिया है कृष्ण का।तो उस गीता कोही फिर भक्तिमार्ग में पढ़ते2 दुर्गति को पा लिया है।फिर बाप जब सच्ची गीता आकर सुनाते हैं तो हम सद्गति को पाते हैं।मनुष्य तो यह नहीं समझते हैं।मनुष्य तो हैं बंदर बुद्धि।मनुष्य को ही बंदर कहा गया है।रामायण में भी दिखाया है कि बंदरों की सेना ली।वास्तव में है मनुष्यों की बात।मनुष्य में ही बंदरों जैसे अवगुण होते हैं।शास्त्र तो हैं ही भक्तिमार्ग के।उनको कितने प्रेम से बैठकर पढ़ते हैं।अब तुम समझते हो ि कवह सब दुर्गति के ही हैं।इसलिए ही उनमें ध्यान नहीं जाता है।बाप जो सर्व का सदगति दाता है उनको ही याद करना है।गीता भल पढ़ते आते है ;परंतु रचता औ रचना को ना जानने कारण नेति2 करते आते हैं।सच्ची गीता तो सच्चा बाप ही आकर सुनाते हैं।यह है विचार–सागर–मंथन करने की बातें।जो सर्विस पर होंगे उनका ही अच्छी रीति ध्यान जावेगा कि किस प्रकार मनुष्यों को अच्छी रीति समझावें। तीर ऐसा डालो जो मनुष्यों को पूछना पड़े कि यह क्या कहते हो।सीधा बताना है कि कृष्ण भगवानोवाच की गीता को पढ़ते2 भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।शिव भगवानोवाच की सच्ची गीता को पढ़कर सदगति को पाते हैं। बाबा ने यह भी कहा है कि हर एक चित्र पर जरूर ही लगा हुआ हो कि ज्ञान सागर पतित–पावन गीता ज्ञान दाता परमप्रिय परमपिता परमशिक्षक परमसदगुरू त्रिमूर्ति शिव भगवानोवाच।यह अक्षर तो जरूर लिखो जो कि मनुष्य समझ जावे कि त्रिमूर्ति शिव परमात्मा ही गीता का ज्ञान दाता है ना कि कृष्ण। ओपीनियन भी इसी पर लिखवाते रहो।बस जो बाबा ने कहा वो ही लिखते रहते हैं।और कुछ भी विचार–सागर–मंथन नहीं करते हैं।तो अब बच्चों को ही समझाते रहते हैं।यह डायरैक्शन जाते हैं।मैगज़ीन जो छपवाते हैं, मैगज़ीन तो कॉमन है।दुनियां में ढेर छपती है।यह तो जैसे कि हम बंदरों की कॉपी करते हैं।वातावरण आदि दुनियां से बिल्कुल न्यारा होना चाहिए।मगज़ीन्स तो सब ही छपवाते रहते हैं।हमारी तो मुख्य है गीता।बाप तो दिन–प्रतिदिन नई2 प्वाइंट्स भी देते रहते हैं। तो क्या करना चाहिए?सच्ची गीता बनानी चाहिए।फिर उसमें पार्ट वाल्यूम सेकेंड, थर्ड वाल्यूम निकालते रहना चाहिए।यह गीता तुम कोई भी अखबार में भी डाल सकते हैं।जो मनुष्य समझेंगे कि

यह गीता तो एक ही बार बाप सुनाते हैं जिससे ही पुरानी दुनियां स्वाहा हो जाती है।वो गीता मनुष्य पढ़ते आते हैं।पुरानी दुनियां तो स्वाहा होती ही नहीं है।तो यह नई2 प्वाइंट्स धारण करने की है।गीता का नाम अखबार में डालो तो बहुत ही मनुष्य लेवें।और लिखत भी ऐसी हो जो किसी को ज्ञान का तीर लग जावे।वो वेद–शास्त्र गीता आदि जो भी पढ़ते हैं उनमें है अज्ञान।भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं ना।अब यह है ज्ञान मार्ग।तो अब तुम्हारी मैगज़ीन के बदले वास्तव में गीता निकालनी चाहिए।अखबार में डालना चाहिए।तुम लिख सकते हो कि सच्ची गीता से भारत हैविन बनता है।अक्षर ऐसे क्लीयर हों जो कोई सुनते ही फौरन मंगवा लेवें।सच्ची गीता सुनने से भारत हैविन में जा रहे हैं।सच्ची और झूठी गीता में रात–दिन का फर्क है। मैगज़ीन में तो कुछ भी नहीं है।हमारा बाबा तो गीता ही सुनाते हैं।संजय ने भी गीता ही लिखी है ना कि मैगज़ीन।ज्ञानामृत भी नहीं कह सकते हैं।गीता को ज्ञानामृत कहना भी रांग है।भल बाबा ने इतने दिन नहीं कहा।दिन प्रतिदिन नई2 बातें सुनाते हैं ना।ऐसे नहीं आना चाहिए कि आगे बाबा ने क्यों नहीं कहा?ड्रामा में ही नहीं था।अब बाप कहते हैं कि यह मैगज़ीन काम की नहीं है।ऐसे2 मैगज़ीन किताब आदि तो दुनियां में बहुत छपते।कोई का दाम जास्ती, कोई का कम होता है। तुमको तो बड़े दाम वाली यह बड़ी गीता बनानी चाहिए।गीता पर ही ध्यान जाना चाहिए। बाकी फलाने ने यह पूछा ,यह किया यह सर्विस समाचार ..... .नहीं।गीता ही बनानी पड़े। दिन प्रतिदिन नई प्वाइंट्स तो बाप सुनाते ही रहते हैं।तो बाबा की मुरली से प्वाइंट्स निकाल कर इकट्ठी करनी चाहिए।फिर कुछ पुरानी , कुछ नई प्वाइंट्स।सच्ची गीता ही निकालनी चाहिए। उसमें भले लिखा हुआ हो कि झूठी गीता कृष्ण की पढ़ने से भारत हेल में गया है।सच्ची गीता सुनने से भारत हैवन में जा रहा है।तो यह आवाज फिर बहुतों के कानों में जावेगा।लाइब्रेरी में भी मुफ्त रख सकती हो।गवर्मेंट भी मुफ्त रखती है ; परंतु उन सभी किताबों आदि में तो किचड़ा ही है डुबोने लिए। यह तो गोल्डेन एज में ले जाते हैं।इसलिए ही लिखते हैं कि राइज और फाल।हिंदी में कहते हैं भारत का उत्थान तथा पतन।राइज अर्थात् कन्स्ट्रक्शन ऑफ डीटी डाइनैस्टी 100% पीस प्रासपेरिटी की स्थापना होती है।फिर कल्प बाद फाल होता है।डेविल डाइनेस्टी का फाल।राइज .....कन्स्ट्रक्शन डीटी डाइनैस्टी का होता है।फाल के साथ डिस्ट्रक्शन लगना है।सभी डेवल डाइनेस्टी का विनाश।एकदम परफैरस में लिखना चाहिए जो कि कोई खोलने से ही पढ़े।प्रैक्टिकल में हो रहा है ना। तुम्हारा सारा मदार गीता पर है।बाप ही आकर सच्ची गीता सुनाते हैं।बाबा रोज इस पर ही समझाते हैं बच्चे मनमनाभव। देह सहित देह के सर्व सम्बंध छोड़ अपने को आत्मा समझो। देह का सारा इतना पसारा है। आत्मा तो आत्मा ही है।बाप कहते हैं इस देह के सारे पसारे भूलकर अपने को आत्मा समझो।मुझ बाप को याद करो।अभी घर जाना है।आधा कल्प वापस जाने लिए ही इतनी भक्ति आदि की है।सतयुग में तो कोई वापस जाने का पुरुषार्थ ही नहीं करते हैं।वहां तो सुख ही सुख है।गाते भी हैं दुःख में सिमरण सब करे सुख में करे नाक कोये ; परंतु सुख कब है दुःख कब है यह नहीं जानते हैं।मनुष्यों की बुद्धि तो बिल्कुल ही जैसे कि खोखली हो गई है।अब तुम जानते हो कि शंकराचार्य आदि भी पॉलिटिकल बातों में घुस गये हैं।वास्तव में इनको पॉलिटिकल बातों में घुसना नहीं है। हमारी पॉलिटिकल बातें तो हैं गुप्त।हम भी रुहानी मिलेट्री हैं ना।शिवबाबा की शिवशक्ति सेना हैं।इनका भी अर्थ कोई समझ नहीं सकते हैं।देवियों आदि की भी इतनी पूजा होती है ;परंतु कोई भी उनकी बायोग्राफी आदि को नहीं जानते हैं।जिनकी पूजा करते हैं उनकी बायोग्राफी को तो जानना चाहिए ना।उंच ते उंच शिव की पूजा है फिर ब्रह्मा ,विष्णु ,शंकर की। फिर ल.ना. की राधा की कृष्ण के मंदिर हैं। और तो कोई है नहीं। एक ही शिवबाबा पर कितने ही नाम रखकर मंदिर बना दिये हैं।अभी तुम्हारी

बुद्धि में सारा चक्र है। ड्रामा में मुख्य एक्टर्स भी होते हैं ना।वो है हद का ड्रामा।यह है बेहद का ड्रामा।उसमें मुख्य कौन2 हैं यह भी तुम जानते हो।मनुष्यों की बुद्धियों में तो है ठिक्करियां।कह देते हैं हे रामजी संसार बना ही नहीं है।इस पर भी एक शास्त्र बनाया है।फिर तिक2 बैठ लिखी है।अब बाप कहते हैं शास्त्र आदि की तिक2 बंद।यह तिक2 बंद करो।बाप कहते हैं बाप को याद करना है और सृष्टि चक्र को याद करना है। बाप की ही याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।तुम निरोगी बनेंगे।आयु भी बड़ी होगी।चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे।अब हो नर्क के मालिक।फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। स्वर्ग के मालिक तो सभी बनते हैं।फिर उसमें भी है पद।जितने आप समान बनावेंगे उतना उंच पद पावेंगे।अविनाशी ज्ञान रतनों का दान ही नहीं करेंगे तो रिटर्न में क्या मिलेगा?कोई साहुकार बनते हैं तो कहते हैं कि इसने पास्ट जन्म में अच्छे कर्म किये हैं, दान–पुण्य अच्छा ही किया है।अभी बच्चे जानते हैं कि रावणराज्य में तो सभी पतित ही हैं।पाप कर्म ही करते रहते हैं।यह दुनियां ही है पापत्माओं की।इनमें सबसे जास्ती पापात्मा कौन है? (जो) अपने को शिवोअहम् ततत्वम् कहते हैं। पुण्यात्माओं में से सबसे पुण्यात्मा हैं ल.ना. । हां, ब्राह्मणों की भी उंच रखेंगे जो कि सबको ही उंच बनाते हैं।वो तो है प्रारब्ध। यह ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणकुलभूषण श्रीमत पर यह श्रेष्ठ काम कर रहे हैं।ब्रह्मा का नाम मुख्य है।त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं ना।अगर शंकर बड़ा होता तो फिर त्रिमूर्ति शंकर क्यों नहीं कहते? अब तो तुमको हर एक बात में ही त्रिमूर्ति शिव कहना पड़े। ब्रह्मा द्वारा स्थापना.... .....यह तो ज्ञान है ना। विराट स्वरूप भी बनाते हैं ; परंतु ना शिव को दिखाते हैं ना ही ब्रह्मा को दिखाते हैं।देवता ,क्षत्रिय, वैश्य ,शूद्र ही सिर्फ दिखाते हैं।ब्राह्मणों को और शिव को तो गुम ही कर दिया है।चार वर्ण दिखाते हैं।पांचवा गुम कर दिया है।यह भी तुम बच्चों को समझाना है।तुम्हारे में से भी यथार्थ रीति कोई की ही बुद्धि में मुश्किल ही बैठता है।अथाह प्वाइंट्स हैं ना।जिसको ही टॉपिक्स भी कहते हैं।कितनी टॉपिक्स मिलती हैं।अभी जहां–तहां यह टॉपिक रखो कि झूठी गीता से भारत की दुर्गति। फॉल। सच्ची गीता से भारत की सदगति। राइज़ ।यह बहुत अच्छा टॉपिक है। झूठी गीता पढ़ने से भारत दुर्गति को पाया है। कंगाल बन गया है।सभी गीता भगवान द्वारा सुनने से मनुष्य से देवता, विश्व के मालिक बन जाते हैं।टॉपिक कितनी अच्छी है ; परंतु समझाने की भ्झी अक्ल चाहिए ना। अभी सच्ची गीता बनानी चाहिए। उसमें यह क्लीयर लिख देना चाहिए।तो मनुष्य समझे और पूछे।शिव भगवानोवाच ये सदगति कृष्ण भगवानोवाच से दुर्गति। कितना सहज है। एक2 ज्ञान की प्वाइंट्स लाखों रुपयों की है।जिससे ही तुम क्या बनते हो?तुम्हारे तो कदम2 में ही पदम है।इसीलिये ही देवताओं को भी पदम का ही फूल दिखाते हैं। तुम ब्राह्मण मुखवंशावली ब्राह्मणों का नाम ही गुम कर दिया है।वो ब्राह्मण लोग कच्छ में कुरम, गीता रखते हैं। अभी आप हो सच्चे ब्राह्मण। तुम्हारे कच्छ में है सच्चम। उनकी कच्छ में है कुरम। तो तुमको नशा चढ़ना चाहिए। हम तो श्रीमत पर स्वर्ग बना रहे हैं। बाप राजयोग सिखा रहे हैं ना।तुम्हारे पास कोई पुस्तक आदि नहीं है। बाबा कितना सिम्पल बैज देते हैं। उसमें त्रिमूर्ति का चित्र है। तो सारी गीता उसी में आ जाती है।सेकेंड में सारी गीता समझाई जाती है। इस बैज द्वारा तुम सेकेंड में भी कोई को समझा सकते हो।यह तुम्हारा बाप है।उनको याद करने से तुम्हारे पाप विनाश होते होंगे। ट्रेन में जाते, चलते, फिरते कोई भी मिले बोलो आपको ईश्वरीय सौगात देते हैं। तुम इनको अच्छी रीति समझेंगे तो यह बनेंगे।कृष्णपुरी में तो सब जाना चाहते हैं ना।इस पढ़ाई से यह बन सकते हैं।पढ़ाई से राजाई स्थापन होती है।और धर्मस्थापक कोई राजाई नहीं स्थापन करते हैं।तुम जानते हो हम राजयोग सिखाते हैं भविष्य 21जन्मों लिए।कितनी अच्छी पढ़ाई है। सिर्फ रोजाना एक ही घण्टा पढ़ो।

बस। वो पढ़ाई तो चार–पांच घंटे पढ़ाई जाती है।यह तो एक घण्टा भी बस। .....सवेरे का समय ऐसा है तो जो कि सबको ही फुर्सत होती है। बाकी कोई बांधेलियां आदि हैं सवेरे नहीं आ सकती हैं तो और टाइम रखते हैं।बैज लगा हुआ है कहीं भी जाओ तो यह पैगाम दे आओ। अखबार में तो यह बैज डाल नहीं सकते हैं।एक ही तरफ का डाल सकेंगे। मनुष्य यूं ही तो समझ नहीं सकेंगे सिवाय समझाने के। है बहुत सहज। यह धंधा तो कोई भी कर सकते हैं। अच्छा खुद भले याद नहीं करते हैं दूसरों को याद दिलावें वो भी अच्छा। दूसरे को कहेंगे देही अभिमानी बनो। खुद देह अभिमान में होंगे तो कुछ ना कुछ विकर्म होता ही रहेगां पहले2 मनसा में तूफान आते हैं जिनसे ही फिर कर्मणा में आते हैं।मनसा में तो बहुत आवेंगे।उस पर भी बुद्धि से काम लेना है।बुरा काम कब करना नहीं है।अच्छा ही काम करना है।संकल्प अच्छे भी आते हैं ,बुरे भी आते हैं। बुरे को रोकना चाहिए। यह बुद्धि बाप ने दी है।दूसरा कोई समझ नहीं सकते।वो तो रांग काम ही करते रहते हैं।तुमको तो राइट ही काम करने हैं।अच्छे पुरुषार्थ से राइट काम होता है। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। संजय को भी समझाते रहते हैं कि पुरानी रस्म छोड़ दो। समथिंग न्यू। अब सच्ची गीता निकालनी चाहिए।भल अखबार में भी पड़ जावे। झूठी गीता से दुर्गती कृष्ण भगवानोवाच। सच्ची गीता से सदगति शिव भगवानोवाच। गीता (से) योग और ज्ञान दोनों ही है। फिर योग का भी अलग किताब क्यों बनावें?गीता में ही योग भी आ जाता है।बाबा ने पहले डायरैक्शन नहीं दिया अब देते हैं।दिन प्रतिदिन नई डायरैक्शन मिलती रहती है। ओम।

3–3–67 की रही हुई प्रातःक्लास की प्वाइंट्स – भक्ति मार्ग अब खलास। सतयुग में तो ऐसे काम होते ही नहीं हैं।ड्रामा को बहुत अच्छी रीति समझना है।सेकेंड वा सेकेंड की नूंध है। कल्प बाद फिर यही बात रिपीट होगी।ड्रामा को भी अच्छी रीति समझना चाहिए। अच्छा ,कोई जास्ती नहीं याद कर सकते हैं तो बाप कहते हैं अल्फ को बे बादशाही ही को याद करो।अंदर में यह धुन लगा दो।हम आत्मा कैसे 84जन्मों का चक्र लगाकर आती हैं।हम पहले देवता थे, फिर क्षत्रिय बने.....चित्र पर बैठ समझाओ। बहुत आसान है।यह है रुहानी बच्चों की रूह–रिहान। बाप तो रूह–रिहान करते ही हैं बच्चों से। और कोई से तो कर नहीं सकते हैं।बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप याद दिलाते हैं कि तुमने 84जन्म लिये हैं।मनुष्य ही बने हो।कोई घोड़ा, गध नहीं बने हो। जैसे बाप आर्डिनेंस निकालते हैं कि विकार में नहीं जाना है।वैसे ही यह भी आर्डिनेंस निकालते हैं कि किसी को रोना नहीं है।सतयुग–त्रेता में कब कोई रोते नहीं हैं।छोटे बच्चे भी नहीं रोते हैं।रोने का हुक्म नहीं है।वो तो है ही हर्षित रहने की दुनियां।इसकी प्रैक्टिस सारी ही यहां करनी है। गुडमार्निंग।

4–3–67 प्रातःक्लास की बाकी प्वाइंट – तुम बच्चे जानते हो कि हम अभी संगम पर हैं।फिर सतयुग में होंगे। हम ट्रांसफर हो जावेंगे। पुरानी दुनियां का विनाश तो सामने ही खड़ा है। फिर हम जाकर नई दुनियां में अपना राज्य करेंगे। अनेकों बाद ही हमने यह चक्र लगाया है। यह बेहद का ड्रामा है। अब बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो ही विकर्म विनाश होंगे।बुलाते भी हो कि हे पतित–पावन आओ आकर पावन बनाओ ; क्योंकि आत्मा दुःखी बनी हुई है। यह है ही दुःखधाम। बाप कहते हैं अब इनको भूलते ही जाओ।बाप नया मकान बनाते हैं तो पुराने से दिल हट जाती है ना। यहां है बेहद की बात।स्थापना हो रही है। जरूर पुरानी दुनियां का विनाश होगा। तो क्यों नहीं अपने घर और राजधानी को याद करेंगे। इसमें कोई तकलीफ तो है ही नहीं। कहीं भी जाओ बुद्धि में बाप को और वर्से को याद करो। इनसे ममत्व तोड़ दो। मुझ माशूक को ही याद करो। तुम आधा कल्प के आशिक हो। याद करते आये हो। अब आया हूँ। तो अब सब बाकी देहधारियों को छोड़ मुझ एक बाप को ही याद करो तो तुम सतोप्रधान बनेंगे। 84जन्मों की सीढ़ी उतरते आते हो। अब इसी जन्म में चढ़ती कला होती है। ओम।